© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

'ब्रह्मराक्षस' की व्याख्या: वर्तमान सन्दर्भ में

गोविन्द वर्मा
ग्राम–अहिबरनपुर, पोस्ट–हीरापट्टी,
जिला–आजमगढ़, उत्तर प्रदेश।

ब्रह्मराक्षस मुक्तिबोध की एक प्रसिद्ध कविता है। यह सर्वप्रथम अप्रैल 1957 ईमें प्रकाशित . हुई थी। उस समय हिंदी में किसी का ध्यान इसकी तरफ नहीं गया। बाद में1964 ई. में जब वह मुक्तिबोध के प्रथम कविता-संग्रह 'चाँद का मुंह टेढ़ा है' में संकलित की गई तो लोगों ने इसकी तरफ ध्यान दिया। ब्रह्मराक्षस कविता 'अँधेरे में' कविता के बाद दूसरी प्रसिद्ध कविता है। आकार में यह कविता अपेक्षाकृत छोटी है, लेकिन अपने स्वरूप से यह एक लम्बी कविता है।

समय के साथ देश की परिस्थितियां तथा रचनाओं की व्याख्या भी बदलती रहती है। इस कविता के माध्यम से मैंने वर्तमान समय में मार्क्सवाद की भारत में स्थिति पर चर्चाकी है। ज्ञातव्य है कि मुक्तिबोध मार्क्सवादी थे। वे इस कविता में फ़ंतासी के माध्यम से मार्क्सवाद की दशा पर प्रकाश डालते हैं। मुक्तिबोध अपनी कविता में भयावहता के लिए अँधेरे का प्रयोग बहुलता से करते हैं। वह भयावहता के लिए लोक प्रचलित प्रतीकों का नये ढंग से करते हैं।

शास्त्रों के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण आत्महत्या करता है अथवा उसकी असामयिक मृत्यु होती है तो वह प्रेतयोनि में जन्म लेता है और उसे ब्रह्मराक्षस कहते हैं। यह ब्रह्मराक्षस पूर्व जन्म में एक-मार्क्सवादी चिन्तक था जो अपने कार्य को पूरा न कर सका और इसीचिंता के कारण असमय मर जाता है।

मुक्तिबोध कहते हैं कि मार्क्सवादी विचारधारा की परिधि भारत में सिकुड़ती जा रही है अर्थात भंग हो रहा है-लोगों का उससे मोह, किसी खंडहर की तरह। मार्क्सवाद के बड़े विचारक भारत में नहीं रहे। मार्क्सवाद को वर्तमान समय में भय के निगाह से देखा जा रहा है। उसे समाज और देश के लिए खतरा बताया जा रहा है। ऐसा क्यों किया जा रहा है, यह किसी के समझ में नहीं आ रहा है। लेकिन इसके पीछे अवश्य ही कोई गहरा राज है, सोचीसमझी चाल है।-

'बावड़ी' जो की मार्क्सवाद का प्रतीक है तथा 'जलराशियाँ-' उसके ज्ञान का प्रतीक है। उसे अब केवल पुराने गूलर के पेड़ अर्थात कुछेक बुद्धिजीवी बचाये हुए हैं और वही उसके वाहक हैं। मार्क्सवाद के पुराने समाज कल्याण के परिणामों को देखकर संदेह होता है कि एक ऐसी विचारधारा जो दुनिया भर की सभी विचारधाराओं में सबसे नवीन,समष्टिवादी चेतना से ओत-प्रोत, समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने वाली कैसे हाशिये पर आ सकती है।

बावड़ी रूपी मार्क्सवाद के दुर्ग के मुंडेर पर लाल कनेर का गुच्छा लाल झंडा है और श्वेत टगर का पुष्प उस झंडे का तारा है। इस प्रकार लाल झंडा बावड़ी की मुंडेर पर लहरा रहा है और भविष्य के अंधेरे की तरफ आश्चर्य से देख रहा है मानो कि मार्क्सवाद का भविष्य खतरे में है। बावड़ी में एक ब्रह्मराक्षस बैठा है जोकि अकेले में पागल की तरह बड़बड़ा रहा है, ठीक उसी तरह जैसे की मार्क्सवादी बुद्धिजीवी अपने सेफजोन में क्रांति की बात करते हैं। मार्क्सवादी विचारधारा में एक शब्द आता है 'ऐतिहासिक गलती' (Historical mistakeजिसका काफी महत्व होता है। ब्रह्मराक्षस पूर्व (योनि में जन्म लेना पड़ा। -जन्म में अपने विचार आम जनता में नहीं पहुंचा पाया जिसके कारण उसे प्रेत वैसे ही मार्क्सवादी भारत में अपनी जमीन खोते जा रहे हैंऔर अपनी गलतियों का कारण ढूढ़तें हैं पुनउसी गलती को रात :-दिन दूर करने की कोशिश करते हैं। फिर भी उनकी पहुंच जितनी आम जनतातक होनी चाहिए उतनी नहीं हो पाती है। इसी असफलता के कारण वे (वर्ग-सर्वहारा) आत्मालोचना करते हैं, क्रुद्ध होते हैं और अधिक संघर्ष करने का संकल्प लेते हैं परन्तु यहाँ ब्रह्मराक्षस है जो मन्त्रों का उच्चारण करता है, धाराप्रवाह संस्कृत में गालियां बकता है।

जब कभी सूर्य की किरण बावड़ी की दीवारों से टकराकर अन्दर पहुंचती है तो ब्रह्मराक्षस समझता है कि सूर्य ने उसे 'नमस्ते' किया है और जब कभी भूले से चन्द्रमा की किरण बावड़ी के तल तक पहुंचती है तो ब्रह्मराक्षस समझता है कि चंद्रमा ने उसकी वंदना कर उसे ज्ञान-गुरु मान लिया है। इसी प्रकार समाज में जब किसी आन्दोलन की अगुवाई मार्क्सवादी करते हैं तो समाज के अन्य वर्ग उनके पीछे हो लेते हैं। इससे वे गौरवान्वित होते हैं।

ब्रह्मराक्षस दुगुने उत्साह से सभी सभ्यताओं के ग्रंथों,वेदों की ऋचाओं, छंद, मन्त्र, प्रमेयों से लेकर, 19वीं और 20वीं सदी के सभी महान दार्शनिकों के सिद्धांतों पर नया व्याख्यान दे रहा है तथा अपने तर्कों द्वारा उनका खंडन और मंडन कर रहा है। उसके इस व्याख्यान को टगर, करौंदी, गूलर आदि सुन रहे हैं। इसी प्रकार मार्क्सवादी विचारकों के भी व्याख्यान उनकी सभाओं में उपस्थित सीमित लोग ही सुनते हैं।

कविता के दूसरे भाग में प्रतीकों के माध्यम से मार्क्सवाद के पथ में आने वाली कठिनाइयों का वर्णन है। मार्क्सवाद रूपी जीना है जो साम्यवादी शासन व्यवस्था जैसे निराले लोक तक जाता है परन्तु उसकी प्रत्येक सीढ़ियां चुनौतियों से भरी हैं। उस पर चढ़ना और उतरना, पुन: चढ़ना और लुढ़कना इसके दौरान पैरों में मोच, छाती पर अनेकों घाव आ जाते हैं। बुरे के स्थान पर अच्छे को स्थापित करने का संघर्ष काफी कठिन है अर्थात पूंजीवादी समाज के स्थान पर साम्यवादी समाज स्थापित करना बहुत कठिन है। कुछ सफलता के बदले अधिक असफलता मिलेगी किन्तु यह असफलता बहुत प्यारी होगी क्योंकि असफलता ही सफलता के द्वार खोलती है। सिद्धांत को व्यवहार में लाना निश्चित रूप से बहुत कठिन होता है यह ज्यामिति की संगतियाँ नहीं हैं और न ही गणित की बातें कि शतप्रतिशत - सिद्धांत के अनुरूप हों। परन्तु मनुष्य को यदि सिद्धांत को व्यवहार में लाने के लिए जो पीड़ा प्राप्त होती है, उसका महत्व है और वह आनन्ददायक भी है चूँकि ब्रह्मराक्षस एक शोधक है और वह समाज को प्रगतिपथ पर अग्रसर करने के लिए निरंतर शोध कर रहा है। सूर्योदय उसे ऐसा लगता है जैसे चिंता की-

नदी प्रवाहित हो रही है और चंद्रमा उसके माथे के घावों पर सफेद पट्टियां बांध देता है।-खूनी

अंत में ब्रह्मराक्षस अपने उन्हीं सिद्धांतों, प्रमेयों, दशमलव आदि में उलझा हुआ मारा गया। इसी प्रकार मार्क्सवादी विद्वान भी पूरी जिन्दगी अपने कक्ष में बहुत से विमर्शों, ग्रन्थों में उलझ कर मर जाते हैं अर्थात वह अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाते हैं। मुक्तिबोध यहाँ स्वाभाविक मृत्यु की बात नहीं करते हैं वह कहते हैं कि 'शोधक मारा गया' अर्थात अपनी चिंता, भविष्य के सुनहरे सपनों आदि के द्वारा मारा गया।

शोधक तमाम विद्वानों, दार्शनिकों, चिंतकों के पास गुरु प्राप्त करने के लिये भटका परन्तु उसे कोई नहीं मिला अर्थात वह स्वाध्याय से ज्ञान अर्जित किया था। उसे किसी का मार्गदर्शन नहीं मिला। इसका कारण था कि अब पूंजीवादी युग आ गया है अब धन के बिना कुछ नहीं मिलता है। धन ने हृदय, मन सभी को अपने लोभ-पाश में जकड़ लिया है। धन से अभिभूत अंत:करण धन को ही परम सत्य कहता है जोकि सत्य नहीं झूठ है, सत्य के साथ छल है। धन की चमक सत्य नहीं भ्रम है।

मार्क्सवाद व्यष्टि से ज्यादा समष्टि को बल देता है और शोधक भी विश्व की महत्ता को मानता है परन्तु मानवतावादी दृष्टि से व्यक्ति का भी उतना ही महत्व है। मुक्तिबोध कहते हैं कि यदि मेरी उससे भेंट होती तो मैं उसकी व्यथा को खुद जी कर समाज के कल्याण के लिए उसका हःोना कितना जरूरी है, उसे बताता। परन्तु शोधक की त्रासदी तो यह है कि वह इसी व्यष्टि और समष्टि, भीतर और बाहर, आत्म और विश्व के संबंध को न समझ कर पिसता रहा।

जिस प्रकार मार्क्सवादी चिन्तक सिद्धांतों, किताबों,लाल झंडे आदि के बीच अपनी कोठरी में मर जाते हैं उसी प्रकार ब्रह्मराक्षस भी बावड़ी के आस-पास की झाड़, तमविवर में मर गया-, जैसे कोई पक्षी। वह किरण जो विश्व के लिए कल्याणकारी थी सदा के लिए बुझ गई। न ही उसे कोई जान सका, न ही समाज उसके शोधों से कोई लाभ ले पाया। इसलिए मुक्तिबोध उसका शिष्य होना चाहते हैं जिससे वे उसका अधूरा कार्य पूरा कर सकें। उसकी वेदना को उसके पूर्ण निष्कर्षों तक पहुंचा सकें और एक साम्य वादी समाज की स्थापना कर सकें।